Forum for Linguistic Studies 2025, 7(2)
ISSN:2705-0610 E-ISSN:2705-0602

विद्यालय विविधता के संदर्भ मे जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती कोमल शर्मा
शोधार्थी, विषय: शिक्षा (Education), विश्वविद्यालय: निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर

डॉ. सारिका ताखर
पद: एसोसिएट प्रोफेसर, विभाग: पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, संस्थान: निम्स इंस्टीट्यूट ऑफ मीडिया स्टडीज़ एंड मास कम्युनिकेशन, विश्वविद्यालय: निम्स विश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर

सारांश (Abstract)

वर्तमान शोध अध्ययन "जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" पर आधारित है। शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास की निरंतर प्रक्रिया है जो मानव जीवन को दिशा प्रदान करती है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह पता लगाना है कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का स्तर क्या है तथा भाषा, लिंग और विद्यालय प्रबंधन के आधार पर इनमे क्या भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

शोध में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया तथा 800 विद्यार्थियों (400 छात्र एवं 400 छात्राएँ) को नमूना समूह के रूप में चुना गया। डेटा संग्रह हेतु डॉ. आभा पाण्डेय की व्यक्तित्व मापनी, एस. वाजपेय की सांस्कृतिक मूल्य मापनी एवं एस. एस. त्रिपाठी की धार्मिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन, टी-परीक्षण तथा सहसंबंध गुणांक जैसी सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया।

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के अनुसार, विद्यार्थियों का व्यक्तित्व औसत स्तर से अधिक पाया गया। सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य भी उच्च स्तर के पाए गए, जो यह इंगित करता है कि विद्यार्थियों में नैतिकता एवं सांस्कृतिक चेतना का अच्छा स्तर विद्यमान है। लिंग के आधार पर स्पष्ट अंतर पाया गया—जहाँ छात्राओं में व्यक्तित्व, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों का स्तर छात्रों की तुलना में अधिक था। भाषा के आधार पर किए गए विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों में अंतर पाया गया, किन्तु व्यक्तित्व स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। वहीं विद्यालय प्रबंधन के आधार पर निजी एवं राजकीय विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व में अंतर पाया गया, परंतु सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों में कोई विशेष भिन्नता नहीं पाई गई।

यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल देता है, जिससे भावी पीढ़ी में नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास हो सके।

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा, सतत एवं जीवन पर्यंत चलने वाली एक प्रक्रिया है । शिक्षा किसी भी समाज का आवश्यक अंग है जो उस समाज के विकास के लिए आवश्यक होती है । सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्य ने अपने सीखने की प्रवृति को

प्रकट किया है। एक समाज स्वयं के प्रयासों द्वारा अर्जित एवं विकसित किए गए ज्ञान को अपनी नई पीढ़ी को सिखाता है। सीखने एवं सिखाने की यही प्रक्रिया शिक्षा कहलाती है।

शिक्षा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास मे सहायक होती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक, शारीरिक आदि का बहुमुखी विकास होता है। एक पूर्ण रूप से विकसित मनुष्य ही सभ्य, विकसित एवं स्वस्थ समाज के निर्माण मे भागीदार होता है ।

वेदों के समय से ही भारतीयों ने शिक्षा के महत्व को समझा है। प्राचीन काल मे भारत मे संचालित गुरुकुल, अचार्यकुल, गुरुगृह का उल्लेख ऋग्वेद मे मिलता है। इसके बाद मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ ही इस्लामी सिद्धांतों के आधार इस्लामी शिक्षा पर पूरे देश मे प्रचारित की गयी। आधुनिक काल मे भारत मे व्यापार करने आए यूरोपीय ईसाइयों ने शिक्षा प्रणाली की नींव रखी। इन्होंने शिक्षा देने के लिए स्कूल प्रारंभ किए जिसमे शिक्षा के साथ साथ ईसाई धर्म की सीख भी दी जाने लगी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के फलस्वरूप बड़ी संख्या मे वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि पैदा हुए लेकिन छात्रों को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर पढ़ने की कोई योजना नहीं बनायी।

व्यक्तित्व विकास की अवधारणा

व्यक्तित्व, किसी व्यक्ति के गुणों का एकीकृत संग्रह है। ये गुण जन्मजात अथवा अर्जित हो सकते है। व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के आधार पर एक दूसरे से भिन्न होते है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व जैविक एवं वातावरणीय कारकों पर निर्भर करता है। व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अन्तरक्रिया से गुण सृजित करता है। वह अपने आस पास रहने वाले लोगों के गुणों को देखकर एवं उनका अनुकरण करके गुण अर्जित करता है। इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व होता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व को बनाने वाले ये गुण सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकते है। नकारात्मक गुण व्यक्ति के जीवन को दिशाहीन, उदासीन एवं निरर्थक बना देते है। अतः स्वस्थ समाज के लिए उसके लोगों का व्यक्तित्व उत्कृष्ट होना चाहिए।

धार्मिक मूल्य की अवधारणा

मानवीय इतिहास मे धर्म सर्वोच्च स्थान रखता है। धर्म शब्द को नाना अर्थों मे व्यक्त किया गया है। ये शब्द अनेकों बार संतों एवं विचारकों के वचनों मे सुनने को मिलता है। पौराणिक युग से लेकर आज तक, प्रत्येक युग मे धर्म की मूल प्रकृति को समझने के लिए कई प्रयास किए गए है। कुछ विचारक धर्म को कर्तव्य के रूप मे परिभाषित करते है। वर्तमान समय मे मनुष्यकृत रीति रिवाजों, मजहबी प्रथाओ को धर्म का नाम दिया जाता है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार धर्म एक अवस्था है जिसमे मन और आत्मा, आस्था के विषय के साथ एक हो जाते है। राजबली के अनुसार, धर्म वह मार्ग है जो इस जीवन के विकास के साथ साथ अगले जन्म को भी बेहतर बनाता है। उपदेशक मोरारी बापू के अनुसार धार्मिक मूल्य, ईश्वर तक ले जाने वाला मार्ग है। भारतीय सनातन परंपरा के अनुसार, जो कार्य सभी को लाभ पहुँचाता है वो धर्म है। इसीलिए जिससे सम्पूर्ण सृष्टि को लाभ होता है, वही कार्य हमारा धर्म है।

धर्म के दस अंग बताए गए है। केवल भगवान को मानना, पूजापाठ, कर्म कांड या व्रत उपवास धर्म नहीं है। सत्य, कर्म, अहिंसा, अपरिग्रह सेवा, संतोष, संयम, श्रद्धा आदि सामान्यतः धर्म के अंग है। इन अंगों को जीवन मे उतरना

ही धार्मिक मूल्य है। मनुष्य सम्पूर्ण जीवन "शांति एवं आनंद" की खोज मे लगा रहता है। लेकिन धर्म के पथ से अलग हो जाने के कारण इन तक पहुँच नहीं पाता। धार्मिक मूल्य इन्ही तक पहुँचने का मार्ग है।

सांस्कृतिक मूल्य

संस्कृति शब्द से तात्पर्य संस्कारों से है। जैसे जैसे बालक संस्कारों की ओर अग्रसर होता है वैसे वैसे उसका समाजीकरण होता जाता है। अंग्रेजी मे संस्कृति का अर्थ है – वह मानसिकता जो ज्ञान, संस्कार, सभ्यता आदि को विकसित करती है। संस्कृति कोई व्यक्तिगत चीज नहीं है, ये एक सामूहिक घटना है। संस्कृति को जीवन जीने के तरीके के रूप मे देख जाता है जो विकास एवं परिवर्तन के बाद अगली पीढ़ी तक पहुंचता है। इसमे ज्ञान, कला, नैतिकता, विचार, मानवीय मूल्य, रीति रिवाज, समाज द्वारा बनाए गए मानदंड, शामिल हो सकते है। ये सांस्कृतिक मूल्य मनुष्य को उन्नति की ओर ले जाते है। संस्कृति; कहानी शिक्षण विधि, कथा विधि, आध्यात्मिक कहानियाँ, नीति कथन विधि, खेलकूद, विद्यार्थी संसद एवं समितियाँ, बालदिवस सभा, वार्षिकोत्सव, जयंती पर्व, उत्सव इत्यादि के माध्यम से सिखाई जा सकती है।

वर्तमान समय मे विश्व मे हो रही अशान्ति के पीछे मूल्यों का निरंतर गिरना है। आज का मनुष्य स्वार्थी होता जा रहा है। यही कारण है कि वह अपने बच्चों मे नैतिकता और आचार विचार नहीं डाल पाता। इस वजह से प्रत्येक क्षेत्र जैसे चिकित्सा, न्याय, राष्ट्र निर्माण आदि मे अनैतिकता और भ्रष्टाचार व्याप्त है।। आज का युवा कल का कर्मठ नागरिक होना चाहिए किन्तु आज नशे मे लिप्त युवा अपने जीवन का एवं समाज का नाश करने पर तुला हुआ है। इसीलिए विद्यालयों का अपने विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अधिक दायित्व है।

उपरोक्त बातों को ध्यान मे रखते हुए शोधकर्ता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालाओं मे पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना चाहता है।

समस्या विवरण (problem statement)

विद्यालय विविधता के संदर्भ मे जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों पर शोध करना
2. शिक्षण और सीखने की भाषा (हिन्दी बनाम अंग्रेजी) के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे छात्रों के व्यक्तित्व, धर्म और सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अनुसंधान करना।
3. जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक शोध करना, जिसका लक्ष्य यह पता लगाना है की समूह मे लैंगिक विविधता किस सीमा तक विद्यमान है।
4. प्रबंधन बोर्ड का दायित्व है कि वह जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे नामांकित विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धर्म, और सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अनुसंधान करें जिसमे शहर मे विद्यमान विविधता को ध्यान मे रखा जाए।

शोध पद्धतियाँ (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों के अध्ययन पर केंद्रित है। इस शोध पत्र मे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों के अध्ययन के साथ साथ भाषा, लिंग एवं विद्यालय कि विविधता के आधार पर इन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन भी सम्मिलित है।

व्यक्तित्व, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित जानकारी हेतु आरंभिक अवस्था मे पूर्व प्रकाशित शोध कार्यों का गहनता से अध्ययन किया गया। उन शोध पत्रों के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों के बारे मे एवं इनको प्रभावित करने वाले कारकों के बारे मे जानकारी प्राप्त हुई। पूर्व शोध पत्रों के माध्यम से मिलने वाली जानकारी के आधार पर वर्तमान शोध कार्य का प्रारूप निर्धारित किया गया। शोध कि विशेषताओं को ध्यान मे रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु सर्वेक्षण दृष्टिकोण का उपयोग करके शोधकार्य करने का निर्णय लिया गया। इस शोध कार्य मे अध्ययन क्षेत्र हेतु राजस्थान राज्य के सार्वजनिक एवं निजी दोनों विद्यालयों को उपयुक्त माना गया है। इसी क्रम मे, जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को अध्ययन क्षेत्र के रूप मे चुना गया। इन विद्यालयों मे पढ़ने वाले छात्रों को अध्ययन मे जाँचे जा रहे जनसंख्या के हिस्से के रूप मे शामिल किया गया है। छात्रों की संख्या मे से नमूना चयन हेतु यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन हेतु कुल 800 छात्रों का चयन किया गया जिसमे 400 पुरुष एवं 400 महिला छात्र थे।

वर्तमान शोध कार्य में विश्लेषण हेतु दो प्रकार के चर निर्धारित किए गए हैं: स्वतंत्र चर एवं आश्रित चर। 'व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्य' स्वतंत्र चर है जबकि 'विद्यार्थी' आश्रित चर। स्वतंत्र चरों के अध्ययन हेतु मानक उपकरणों का उपयोग किया गया है। इस हेतु डॉ. आभा पाण्डेय, एस वाजपेय, एवं एस. एस. त्रिपाठी द्वारा विकसित उपकरणों, क्रमशः व्यक्तित्व मापनी, सांस्कृतिक मूल्य मापनी एवं धार्मिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि के माध्यम से क्रमशः 0.78, 0.71, 0.62 मापी गई। उपरोक्त उपकरणों के माध्यम से संकलित सूचनाओ का विश्लेषण करने हेतु माध्य, माध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण एवं सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के परिणाम (Results)

यह शोध कार्य जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण करने हेतु किया गया है। छात्रों से एकत्रित सूचनाओं का, पूर्व निर्धारित सांख्यिकी मानदंड से विश्लेषण करने पर निम्नानुसार परिणाम प्राप्त होते है ।

1. इस शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के औसत की जांच करना है। इस कार्य हेतु डॉ. आभा पाण्डेय, एस वाजपेय, एवं एस. एस. त्रिपाठी द्वारा विकसित उपकरणों, क्रमशः व्यक्तित्व मापनी, सांस्कृतिक मूल्य मापनी एवं धार्मिक मूल्य मापनी का उपयोग किया गया। उपरोक्त मापनियों द्वारा विद्यार्थियों से उनके व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों से संबंधित जानकारी एकत्रित की गयी एवं इनका विश्लेषण किया गया।

क्र सं	क्षेत्र का नाम	कथनों की संख्या	अधिकतम प्राप्तांक	मध्यांक बिन्दु	प्राप्तांक का मध्यमान

1	**सम्पूर्ण व्यक्तित्व**	80	160	80	111.89
1. अ	श्रेष्ठता की भावना	20	40	20	28.51
1. ब	हीनता की भावना	20	40	20	28.02
1. स	आत्मविश्वास	20	40	20	28.31
1. द	साहस की भावना	20	40	20	27.03
2	**सांस्कृतिक मूल्य**	60	120	60	91.93
3	**धार्मिक मूल्य**	40	40	20	27.88

→ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विश्लेषण चार भागों के अंतर्गत किया गया है – श्रेष्ठता की भावना, हीनता की भावना, आत्मविश्वास, साहस की भावना। प्रत्येक भाग का मध्यांक बिन्दु 20 एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मध्यांक बिन्दु 80 है। छात्रों से एकत्रित जानकारी का विश्लेषण करने पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कुल औसत 111.89 प्राप्त होता है। एवं साथ ही प्रत्येक भाग का औसत 20 से अधिक प्राप्त होता है। इससे ये निष्कर्ष निकलता है कि जयपुर शहर मे पढ़ने वाले विधयार्थियों का व्यक्तित्व मानक स्तर से अधिक है।

→ विद्यार्थियों के सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण करने पर औसत अंक 91.93 प्राप्त होता है जो की इसके मध्यांक विंदु 60 से अधिक है। जो कि यह प्रदर्शित करता है कि विद्यार्थियों मे सांस्कृतिक मूल्यों का उच्च स्तर है।

2. विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों का विश्लेषण करने पर औसत अंक 27.88 प्राप्त होता है जो की इसके मध्यांक विंदु 20 से अधिक है। जो कि विद्यार्थियों मे औसत की तुलना मे धार्मिक मूल्यों के उच्च स्तर को प्रदर्शित करता है। इस शोध कार्य का द्वितीय उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों मे लैंगिक

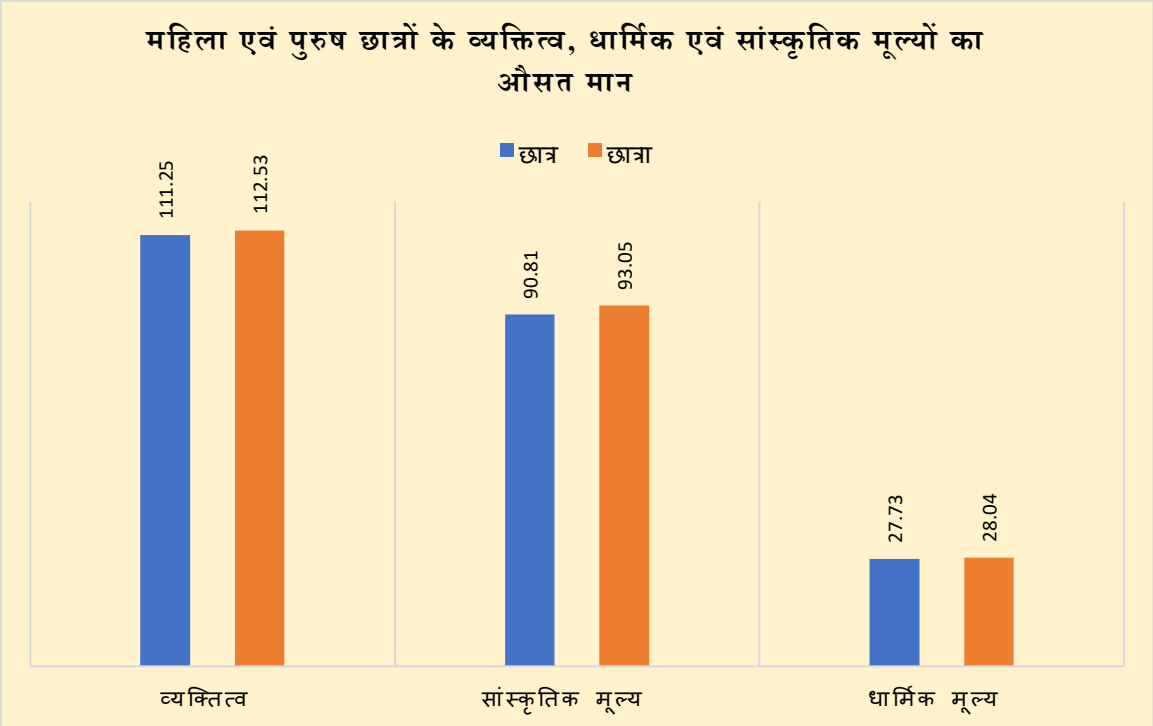

असमानताओं (महिला एवं पुरुष छात्रों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों मे अंतर) का अध्ययन करना है । विद्यार्थियों से एकत्रित जानकारी का टी- परीक्षण द्वारा विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि महिला एवं पुरुष छात्रों के व्यक्तित्व, सांस्कृतिक मूल्यों एवं धार्मिक मूल्यों मे स्पष्ट अंतर है। महिला एवं पुरुष छात्रों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का औसत मान निम्न रेखाचित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है ।

3. इस शोध कार्य का तृतीय उद्देश्य शिक्षण की भाषा (हिन्दी एवं अंग्रेजी) के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। विद्यार्थियों से एकत्रित जानकारी का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी भाषा एवं अंग्रेजी भाषा मे अध्ययन करने वाले छात्रों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों मे स्पष्ट अंतर है, जबकि व्यक्तित्व मे कोई अंतर नहीं पाया गया है।
4. इस शोध कार्य का चतुर्थ उद्देश्य विद्यालय प्रबंधन (राजकीय एवं निजी विद्यालय) के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है । विद्यार्थियों से एकत्रित जानकारी का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि राजकीय विद्यालय मे पढ़ने वाले छात्र एवं निजी विद्यालय मे पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व मे स्पष्ट अंतर है, जबकि सांस्कृतिक मूल्यों एवं धार्मिक मूल्यों मे कोई अंतर नहीं पाया गया है।

चर्चा (Discussion)

इस अध्ययन का उद्देश्य जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना तथा भाषा, लिंग तथा विद्यालय-प्रबंधन के संदर्भ में उनके बीच अंतर को समझना था। परिणामों की व्याख्या निम्नलिखित बिंदुओं में की जा सकती है।

उच्च स्तर के मूल्य एवं व्यक्तित्व

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि अध्ययन क्षेत्र के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों का स्तर मध्यांक बिंदु से अधिक है। यह इंगित करता है कि विद्यालय-परिसर तथा छात्र-समूह में मूल्य-आधारित शिक्षा की संभावना प्रभावशाली रही है। यह दृष्टि पूर्व शोध से भी जुड़ती है जिसमें कहा गया है कि मूल्य-शिक्षा और व्यक्तित्व विकास के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया है। इस प्रकार, यह अध्ययन यह सुझाव देता है कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास का माध्यम नहीं बल्कि व्यक्तित्व और सामाजिक–संस्कृतिक क्षमता विकास का साधन भी बनी हुई है।

लिंग आधारित भिन्नताएँ

लिंग के आधार पर तुलना करने पर यह पाया गया कि छात्राओं में धार्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों का स्तर पुरुष छात्रों की तुलना में अधिक है। यह सामाजिककरण-प्रक्रियाओं एवं पारिवारिक-परिस्थितियों द्वारा समर्थित हो सकता है, जहाँ लड़कियों को पारंपरिक सामाजिक-नैतिक अपेक्षाओं के कारण मूल्य-संवेदनशील बनाये जाने की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। इस प्रकार का लिंग भेद अन्य भारतीय शोधों में भी दिखाई देता है। हालाँकि व्यक्तित्व के समग्र दृष्टिकोण से भिन्नता इतनी स्पष्ट नहीं पाई गई, जिससे संकेत मिलता है कि व्यक्तित्व विकास में लिंग की भूमिका सांस्कृतिक/धार्मिक मूल्यों की तुलना में कम निर्णायक रही।

शिक्षण भाषा (हिन्दी बनाम अंग्रेजी) का प्रभाव

भाषा-माध्यम पर आधारित तुलनात्मक विश्लेषण में यह निष्कर्ष मिला कि हिन्दी-माध्यम और अंग्रेजी-माध्यम के विद्यार्थियों में सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों में अंतर है, जबकि व्यक्तित्व में उल्लेखनीय अंतर नहीं दिखा। यह इंगित करता है कि भाषा-माध्यम और उससे जुड़ी सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश विद्यार्थी की मान-मूल्य संरचना को प्रभावित कर सकती है, मगर व्यक्तित्व के विकास में उसकी भूमिका सीमित प्रतीत होती है।

साहित्य में कहा गया है कि भाषा-माध्यम केवल शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करती बल्कि विद्यार्थियों की सामाजिक पहचान, पारिवारिक मूल्यबोध एवं सांस्कृतिक संवाद को भी प्रभावित कर सकती है। इस विषय में आगे-आगे अध्ययन की संभावना है कि किस प्रकार भाषा-परिसर, शिक्षक-प्रेरणा, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ भाषा-माध्यम द्वारा मूल्य-संवर्धन में भिन्नता लाती हैं।

विद्यालय-प्रबंधन (राजकीय बनाम निजी) का प्रभाव

यह अध्ययन यह दर्शाता है कि विद्यालय-प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में फर्क पाया गया है, लेकिन सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों में विशेष अंतर नहीं मिला। इसका अर्थ यह हुआ कि निजी व सरकारी विद्यालय-प्रबंधन में संसाधन, ट्रैक रिकॉर्ड, पारिस्थितिकी या अनुशासन-प्रणाली जैसे कारक व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर सकते हैं, जबकि सामाजिक-धार्मिक मूल्य संरचनाएँ विद्यार्थी के परिवार और समुदाय के साथ अधिक जुड़ी होंगी। इस निष्कर्ष से सुझाव निकलता है कि विद्यालय स्वयं व्यक्तित्व निर्माण के लिए सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं—लेकिन सांस्कृतिक/धार्मिक मूल्य-निर्माण में उनका प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित हो सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

शिक्षा तभी सार्थक है जब वह ज्ञान के साथ चरित्र, संस्कृति और नैतिकता का विकास करे। समाज, परिवार, शिक्षक और शिक्षा विभाग — सभी का समन्वय ही एक संस्कारित और उत्तरदायी पीढ़ी का निर्माण कर सकता है।

1. समाज के लिए -

समाज को यह समझना चाहिए कि शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि संस्कार और चरित्र निर्माण का माध्यम है। सामाजिक संस्थाएँ एवं समुदाय विद्यालयों के साथ मिलकर मूल्य-शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा दें ताकि युवाओं में नैतिकता, सेवा भावना और सहिष्णुता विकसित हो।

2. माता-पिता के लिए

माता-पिता बच्चों के प्रथम शिक्षक हैं; अतः उन्हें घर में नैतिक और सांस्कृतिक वातावरण बनाना चाहिए। वे बच्चों के साथ संवाद बढ़ाएँ, उन्हें धार्मिक कट्टरता से दूर रखकर संतुलित मूल्य दृष्टि सिखाएँ तथा विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करें।

3. शिक्षकों के लिए

शिक्षकों को केवल विषय-ज्ञान ही नहीं, बल्कि मूल्य-समेकित शिक्षण अपनाना चाहिए। वे अपने व्यवहार और जीवनशैली से विद्यार्थियों के लिए आदर्श प्रस्तुत करें, तथा नैतिक चर्चाओं, सांस्कृतिक आयोजनों और सेवा-कार्यक्रमों से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करें।

4. शिक्षा विभाग के लिए

शिक्षा विभाग को विद्यालय स्तर पर मूल्य-आधारित शिक्षा नीति लागू करनी चाहिए। विद्यालयों में "मूल्य-शिक्षा समन्वयक" नियुक्त किए जाएँ, और शिक्षक-प्रशिक्षण में नैतिक व व्यक्तित्व विकास संबंधी मॉड्यूल जोड़े जाएँ। शिक्षा मूल्यांकन में नैतिकता, अनुशासन और सामाजिक सेवा को भी सम्मिलित किया जाए।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न होकर व्यक्तित्व निर्माण का आधार भी है। जयपुर शहर के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का स्तर औसत से अधिक पाया गया, जो समाज में मूल्याधारित शिक्षा की सकारात्मक दिशा को दर्शाता है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि —

- लिंग के आधार पर छात्रों एवं छात्राओं में स्पष्ट भिन्नता है, जहाँ छात्राओं में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का स्तर अधिक है।
- शिक्षण की भाषा (हिंदी या अंग्रेजी) विद्यार्थियों के मूल्यों को प्रभावित करती है, विशेषकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से।
- विद्यालय प्रबंधन (राजकीय एवं निजी) का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर प्रभाव देखा गया, किन्तु सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों पर इसका प्रभाव नगण्य रहा।

इन निष्कर्षों से यह सिद्ध होता है कि विद्यालयों को विद्यार्थियों में केवल बौद्धिक विकास ही नहीं, बल्कि नैतिक एवं मूल्यपरक विकास पर भी समान ध्यान देना चाहिए। मूल्य-आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को एक जिम्मेदार, संवेदनशील एवं नैतिक नागरिक बनने में सहायता प्रदान करती है।

अतः शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालता है कि शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों के समावेशन की दिशा में ठोस प्रयास किए जाने चाहिए ताकि युवाओं के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके और वे एक सशक्त एवं संस्कारित समाज के निर्माण में अपनी सक्रिय भूमिका निभा सकें।

संदर्भ सूची

1. जोशी, जी. (2000). न्यूरोटिसिज़्म, बहिर्मुखता और शैक्षणिक उपलब्धि का लिंग और संस्कृति से संबंध, इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, 54(1–2), 74–78
2. अखानी, पी., राठी, एन., एवं आइप, ए. (2003). नैतिक शिक्षा, नैतिक निर्णय और व्यक्तित्व विशेषताएँ – एक खोजपरक अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ सायकोमेट्री एंड एजुकेशन, 34(1), 47–51
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, (2012). स्कूलों में मूल्यों के लिए शिक्षा: एक रूपरेखा, नई दिल्ली: एनसीईआरटी
4. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मूल्य शिक्षा – शिक्षकों के लिए एक पुस्तिका, नई दिल्ली: सीबीएसई अकादमिक यूनिट
5. राजू, एस. के. वी. एस. एल. वैल्यू एजुकेशन का परिचय (मानव मूल्य एवं प्रोफेशनल एथिक्स पाठ्य सामग्री)।
6. ब्रैडेन, जे. पी. (1995). स्कूल और शैक्षिक मनोविज्ञान में बुद्धि और व्यक्तित्व, इंटरनेशनल हैंडबुक ऑफ पर्सनैलिटी एंड इंटेलिजेंस में (पृ. 621–650), न्यूयॉर्क: प्लेनम

7. श्रीवास्तव, वी., एवं भाट, एम. आर. (2024). भारतीय संदर्भ में मूल्य शिक्षा और चरित्र निर्माण का महत्व, रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 15(4), 283–286
8. शिक्षा में मूल्य – भारतीय परिप्रेक्ष्य, इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 2(2)(1)
9. कुमार, ए. विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, द अकैडमिक जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट स्टडीज़; 2024
10. यूनिटेक सोसायटी, डॉ. डी. वाय. पाटिल कॉलेज, पिंपरी. मूल्य-शिक्षा: परिभाषा, आवश्यकता, विषय-वस्तु, प्रक्रिया और प्रासंगिकता, पुणे: यूनिटेक सोसायटी